MT

Seat No. | | | | | | | |

2018 1100

MT - HINDI (COMPOSITE) (SECOND OR THIRD LANGUAGE) (H) - SEMI PRELIM - I - PAPER - V

Time : 2 Hours **Preliminary Model Answer Paper** **Max. Marks : 50**

विभाग 1 - गद्य

उ. 1 (क) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

(1) (i) **कृति पूर्ण कीजिए।** **1**

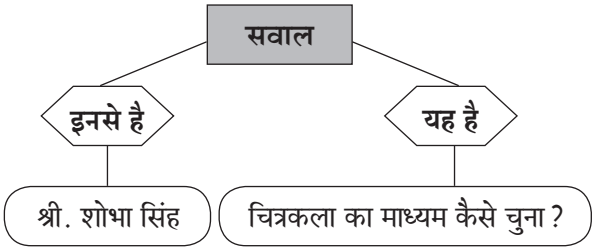

(ii) **प्रस्तुत गद्यांश को पढ़कर ऐसे दो प्रश्न तैयार कीजिए कि जिनके उत्तर निम्न शब्द हों -** **2**

(I) आँगन में क्या बनी हुई थी ?

(II) बचपन में शोभा सिंह जी घर की दीवारें सजाने के लिए क्या बनाने लगे ?

(2) (i) **निम्नलिखित अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए।** **1**

(I) परछत्ती (II) जिल्द

(3) कला के माध्यम से मनुष्य अपने भावों की अभिव्यक्ति करता है। कला जीवन की अनुकृति है। कला जीवन को आनंदित करने का साधन है। कला में ऐसी शक्ति होती है जो कलाकार को संकीर्ण सीमाओं से उठाकर सफलता की मंजिल पर बिठा देता है। कला के कारण मानव मन में संवेदनाएँ एवं अभिरूचि निर्माण होती है। कला जीवन को सत्यम्, शिवम् और सुंदरम् से समन्वित करती है। कला उस क्षितिज की भाँति है जिसका कोई छोर नहीं है। रसात्मकता कला का प्राण होता है। व्यक्ति को जो कला अच्छी लगती है, उसमें वह मग्न हो जाता है। अपनी मनपसंद कला के साथ एकाकार होने से उसका मन हर्ष से भर जाता है। मनपसंद कला उसके जीवन को प्रभावित करती है और उसे आनंद की अनुभूति दिलाती है। जो व्यक्ति अपने जीवन से निराश एवं उदास हो जाता है, वह यदि कला के सान्निध्य चला जाए तो उसके मन से उदासी की भावना सदा के लिए खत्म हो जाती है और वह चिर-आनंद का अनुभव करने लगता है। **2**

उ. 1 (ख) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

(1) (i) **समझकर लिखिए।** **2**

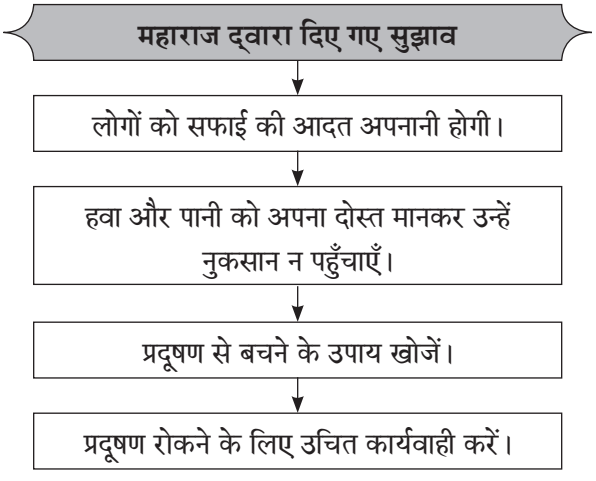

(2) (i) **पर्यायवाची शब्द लिखिए।** **1**

(I) गरमी - ग्रीष्म (II) हवा - वायु

(ii) हवा, पानी **1**

(3) आज प्रदूषण के कारण विश्व में चारों ओर लोगों का जीना दूभर हो गया है। प्रदूषण को रोकने के लिए हमें प्राकृतिक स्रोतों का संरक्षण करना चाहिए। हमें पटाखें जलाना, कूड़ा-कचरा यहाँ-वहाँ नहीं फेंकना चाहिए। मानव जनसंख्या वृद्धि पर रोक लगानी चाहिए। हमें प्रकृति का अंधाधुंध दोहन नहीं करना चाहिए। सरकार को अवैध खनन पर रोक लगानी चाहिए। कारखानों की चिमनियों की ऊँचाई अधिक रखनी चाहिए। अधिक धुआँ निर्माण करने वाले स्वचालित यंत्रों पर रोक लगानी चाहिए और इसके लिए सरकार द्वारा प्रतिबंधात्मक कानून बनाने चाहिए ताकि उल्लंघन करने वालों पर कड़ी-से-कड़ी कार्यवाही हो सके। कारखानों से निकले हुए रासायनिक पदार्थों को तालाब, नदी या सागर में नहीं डालना चाहिए। पर्यावरण को संतुलित रखने के लिए सभी को पेड़ लगाने चाहिए। **2**

विभाग 2 - पद्य

उ. 2 (अ) निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

(1) (i) **कृति पूर्ण कीजिए।** **1**

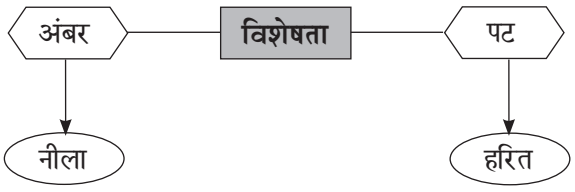

(ii) **निम्नलिखित शब्द शब्द समूहों के लिए कविता में प्रयुक्त शब्द लिखिए।** **1**

शब्द समूह	शब्द
पक्षियों के समूह	**खग वृंद**
शेषनाग के फन	**शेषफन**
समुद्र	**रत्नाकर**
सूरज और चाँद	**युग मुकुट**

(2) **निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए।** **1**

(i) मेखला - करधनी (ii) सर्वेश - ईश्वर

(3) हम भारतवासी संस्कृति से जुड़े लोग हैं। हम अपने देश को माता कहकर पुकारते हैं। हमारी मातृभूमि हमें जीवन देती है। वह हमें प्राकृतिक संसाधनों का भंडार उपलब्ध कराती है। सबकुछ देने वाली मातृभूमि हमारी जननी है। वही हमारी माता है। आमतौर पर एक बच्चे को अपने पिता की अपेक्षा माता से अधिक लगाव होता है। उसी प्रकार का लगाव हमें अपनी धरती से होता है। उसमें हम अपनापन एवं ममत्व ढूँढ़ते हैं। हमारा अपनी देश की धरती से अटूट नाता होता है। हमारे वेदों में भी 'नमो मातृ भूम्यै' ऐसा कहा गया है। अपनी मातृभूमि के प्रति अपनी भावना व्यक्त करते हुए भगवान कृष्ण ने भी कहा है: 'ऊधौ मोहिं ब्रज विसरत नाहिं।' **2**

उ. 2	**(आ)निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।**	
(1)	(i) **संजाल पूर्ण कीजिए।** 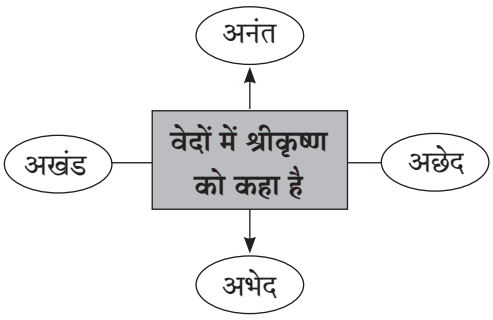	**2**
(2)	**शब्द समूह के लिए एक शब्द लिखिए।** (i) अखंड (ii) अनंत	**1**
(3)	ईश्वर सच्चे प्रेम का भूखा होता है। वह सच्चे मन से की गई भक्ति पर प्रसन्न होता है और अपने भक्तों को स्वयं के दर्शन कराता है। उसे पाने के लिए हमें दिन-रात उसके नाम का जप करने की जरूरत नहीं होती। उसका दिन-रात भजन करना भी आवश्यक नहीं होता। उसे तो सच्चा भक्त कभी भी सच्चे हृदय से पुकार सकता है। जब अंतर्मन से निकलने वाली पुकार में सच्चे मन की भक्ति की एकाग्रता हो, तो वह स्वयं अपने भक्तों की पुकार पर सहायता के लिए आ जाता है। गोकुल में रहने वाली ग्वालिनें कृष्ण से सच्चे हृदय से प्रेम करती थीं। अत: वे उनके साथ नाचते-गाते थे और उनसे माखन पाने के लिए हठ करते थे। संत कबीर ने भी अपनी रचनाओं के द्वारा यही समझाया है कि ईश्वर को पाने के लिए हमें धार्मिक आडंबरों की जरूरत नहीं होती। उसे तो सच्चे हृदय से प्राप्त किया जा सकता है।	**2**
	विभाग 3 - व्याकरण विभाग	
उ. 3	**सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।**	
(1)	**निम्नलिखित शब्दों का मानकवर्तनी के अनुसार शुद्ध शब्द छाँटकर कीजिए ।** (i) बुद्धि (ii) परीक्षार्थी	**1**
(2)	**निम्नलिखित अव्यय शब्द का वाक्य में प्रयोग कीजिए ।** (i) **अरेरे!** : अरेरे! यह क्या हो गया?	**1**
(3)	(i) **सूचना के अनुसार काल परिवर्तन कीजिए।** पानी अब निर्मल नहीं रहेगा।	**1**
	(ii) **निम्नलिखित वाक्यों के काल पहचानकर लिखिए।** अपूर्ण वर्तमानकाल	**1**
(4)	(i) **निम्नलिखित मुहावरे का अर्थ लिखकर सार्थक वाक्यों में प्रयोग कीजिए।** **भरा-पूरा अनुभव करना** : संतुष्ट हो जाना। **वाक्य** : यजमान द्वारा किए गए आतिथ्य सत्कार से हमने **भरा-पूरा अनुभव किया।**	**1**
	(ii) **निम्नलिखित मुहावरे का अर्थ लिखकर सार्थक वाक्यों में प्रयोग की दिए मुहावरों में से उचित मुहावरे का चयन करके वाक्य फिर से लिखिए।** सर्कस की गुड़ियों के करतब देखकर दर्शक **दंग रह गए।**	**1**
(5)	(i) **निम्नलिखित संधि विच्छेद की संधि कीजिए और भेद लिखिए।** महा + आत्मा - महात्मा = स्वर संधि	**1**
	(ii) **निम्नलिखित शब्दों का विच्छेद कीजिए और भेद संधि लिखिए।** दिग्दर्शक - दिक् + दर्शक = व्यंजन संधि	**1**

(6)	(i) **रचना की दृष्टि से वाक्य के प्रकार बताइए।** संयुक्त वाक्य	**1**
	(ii) **निम्नलिखित वाक्यों के अर्थ के अनुसार भेद लिखिए।** प्रश्नार्थक वाक्य	**1**
	विभाग 4 - रचना विभाग	
उ.4	**(अ)**	**4**
(i)	दिनांक - १८ मार्च, २०१८ सेवा में, श्रीमान स्वास्थ्य अधिकारी जी, नगर परिषद, थाना। **विषय** : मुहल्ले की गंदगी के संबंध में शिकायत पत्र। माननीय महोदय, मैं आपके शहर का एक निवासी हूँ। इस पत्र के द्वारा मैं आपका ध्यान शहर में फैली गंदगी की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। पिछले कुछ दिनों से मुहल्ले में गंदगी ज्यादा ही बढ़ गई। कचरे के डिब्बे में भरा कचरा सड़ रहा है। अंदर से ज्यादा कचरा बाहर पड़ा हुआ है। एक तो सफाई कर्मचारी नियमित आते नहीं और आते भी हैं तो बाहर का कचरा छोड़ देते हैं। चारों तरफ बदबू फैल रही ही। मच्छरों का प्रकोप बढ़ गया है। लोग भयंकर बीमारी के शिकार हो रहे हैं। अत: आपसे प्रार्थना है कि नागरिकों के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए शीघ्र ही उचित कार्यवाही करने की कृपा करें। कष्ट के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ। धन्यवाद! भवदीय, प्रियांश जोशी नाम : प्रियांश जोशी पता : ४/सी रूप दर्शन, विकासपुर, थाना। ई-मेल आईडी : priya@gmail.com	
	अथवा	
(ii)	१० जुलाई, २०१८ प्रिय मित्र राहुल, सप्रेम नमस्ते। तुम कैसे हो ? बहुत दिन हो गए लेकिन तुम्हारा पत्र नहीं मिला। आशा करता हूँ कि तुम ठीक होगे। मैं भी कुशल हूँ। मेरी चिंता मत करना। राहुल, हमारे विद्यालय ने महाबलेश्वर की सैर आयोजित की थी। सैर तीन दिन की थी। दिनांक २५ जून को हम सुबह ७ बजे महाबलेश्वर की ओर निकले। करीबन शाम के ४ बजे तक हम महाबलेश्वर पहुँच गए थे। महाबलेश्वर के बारे में तुम्हें क्या बताऊँ ? बहुत ही रम्य प्राकृतिक स्थल है महाबलेश्वर। वहाँ की वादियाँ एवं घाटियाँ देखकर मेरा मनमयूर	**4**

नाचने लगा था। सघन वृक्ष देखने लायक थे। चारों ओर का वातावरण बड़ा ही शांत और खुशनुमा था। हवा में ठंडक व ताज़गी थी। पेड़ों पर उछल-कूद करने वाले बंदरों की सेना देखकर मैं आनंदविभोर हो गया। वहाँ का रम्य वातावरण एवं मित्रों के साथ घूमते-घूमते तीन दिन कैसे बीत गए, इस बात का मुझे पता ही नहीं चला।

जैसे ही छुट्टियाँ शुरू हो जाएगी; वैसे ही तुम मेरे घर पर आना। फिर हम मिलकर खूब खेलेंगे। तुम्हारे माता जी एवं पिता जी को मेरा सादर प्रणाम।

तुम्हारा प्रिय मित्र,

विजय मेहता

पता : २०१, गीता महल,
कृष्ण नगर,
मुंबई : ४०० ०१२
ई-मेल आईडी : vijay-44@gmail.com

उ.4 (आ)

(i) **मुद्दों के आधार पर कहानी लेखन कीजिए।** **4**

मेल-मिलाप

रामपुर नामक गाँव में घनश्याम नाम का एक जौहरी रहता था। वह अपने दाहिने हाथ की एक ऊँगली में सोने की एक अँगूठी पहनता था। उसे उस अँगूठी से बेहद लगाव था। अत: कभी-भी वह उसे अपनी ऊँगली से अलग नहीं करता था। वह अपने परिवार से अलग रहता था। उनके लिए अलग घर की व्यवस्था थी। वह उन्हें मिलने कभी नहीं जाता था।

एक दिन जौहरी को मिलने के लिए पड़ोस के गाँव से एक व्यक्ति आया। उसके पास एक थैली थी। उस थैली में एक घोड़े की तस्वीर थी । उस तस्वीर को बाहर निकालकर उसने जौहरी से कहा, ''मालिक, यह बहुत ही अद्‌भुत तस्वीर है। यह मुझे साधु महाराज ने दी है। मैं इसे बेचना चाहता हूँ। जो कोई इस तस्वीर को खरीद लेगा उसका पूरा जीवन बड़े आराम से कटेगा और उसे किसी भी प्रकार की विपत्तियों का सामना नहीं करना पड़ेगा। उस व्यक्ति की बातें सुनकर जौहरी ने जिज्ञासा से पूछा, ''तो फिर इसका मूल्य कितना है?'' उस व्यक्ति ने बताया सिर्फ पाँच जल की बूँदे और वह भी वे बूँदें एक दूसरी से अलग होनी चाहिए यानी एक साथ मिलनी नहीं चाहिए। यह सुनकर जौहरी हैरान रह गया। थोड़ी देर तक सोचने के बाद उसने तुरंत अपने नौकर के जरिए एक गिलास में पानी मँगवाया। उसने एक प्लेट में पानी की बूँद गिराने की कोशिश की, पर उसके प्रयत्न निष्फल रहे क्योंकि पानी की बूँदें एक-दूसर से मिलने लगी। कई बार कोशिश करने के बाद जौहरी थक गया। वह व्यक्ति मन ही मन हँस रहा था। हैरान होकर जौहरी ने उसकी ओर देखा। तब तपाक से उस व्यक्ति ने कहा, ''एक-दूसरे के साथ मिलना तो बूँदों का स्वभाव है। फिर इंसान होकर तुम क्यों अपने परिवार वालों से अलग रहते हो?'' उस आदमी की बातें सुनकर जौहरी की आँखें खुल गई और वह तुरंत अपने परिवार वालों के पास चला गया।

सीख : हमें जीवन में मेल-मिलाप से रहना चाहिए।

अथवा

(ii) (I) कोढ़ियों की सेवा कौन करती थी? **4**
(II) परदुखकातर व निर्मल हृदय वाले लोगों के नाम बताइए।
(III) गद्यांश में कौन-सी संस्था का उल्लेख हुआ है?
(IV) लेखक के शब्दकोश में कौन-से शब्द नहीं है?

उ. 5 **(अ) विज्ञापन लेखन :** **4**

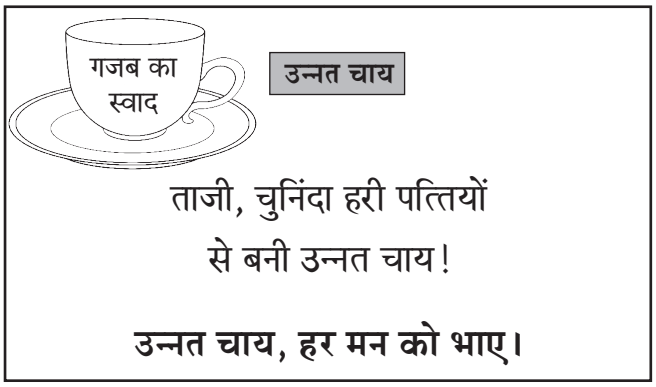

उ. 5 **(आ) निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर ६० से ८० शब्द में निबंध लिखिए ।** **6**

(i) **मेरा प्रिय त्योहार**

हमारा भारत देश त्योहारों का देश है। भारत में दीपावली, होली, नवरात्रि, गणेशचतुर्थी आदि तरह-तरह के त्योहार मनाए जाते हैं। प्रत्येक त्योहार की अपनी सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक विशेषता होती है। इस प्रकार प्रत्येक त्योहार का अपना महत्त्व होता है। सभी को त्योहार अच्छे लगते हैं। मैं भी इसका अपवाद नहीं हूँ।

मेरा प्रिय त्योहार दीपावली है। इसे दीवाली भी कहते हैं। दीपावली दीपों का त्योहार है। यह त्योहार पाँच दिनों तक मनाया जाता है। धन त्रयोदशी, नरक चतुर्दशी, दीपावली, गोवर्धन पूजा और भैयादूज ये पाँच पर्व पाँच दिन मनाए जाते है। अमावस्या की अंधेरी रात जगमग दीपों से जममगाने लगती है। यह दृश्य बहुत ही मनोरम व अद्‌भुत होता है। इस दिन भगवान श्रीराम, माता सीता व भाई लक्ष्मण के साथ चौदह वर्ष का वनवास पूरा करके अयोध्या वापस पधारे थे। इसी कारण लोगों ने खुश होकर अपने घरों के द्‌वार पर भगवान के स्वागत हेतु दीप जलाए थे। तब से यह शुभ दिन दीपावली के रूप में मनाया जाता है। यह त्योहार बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है। दीपावली की शाम को लोग देवी लक्ष्मी और गणेश जी की पूजा करते हैं। बच्चे पटाखे छोड़ते हैं। इस दिन लोग अपने परिवार वालों के पास जाकर उनसे मिलते हैं और खुशियाँ बाँटते हैं, एक-दूसरे को मिठाइयाँ बाँटते हैं।

यह त्योहार शांति, भाईचारा व एकता का संदेश देता है। हमें एक-दूसरे के साथ प्रेम से रहना और एक-दूसरे के जीवन में खुशियाँ निर्माण करने का संदेश दीपावली से मिलता है। इसलिए हर्षित होकर मैं कहता हूँ -

''त्योहार है दीपावली का
सुख-समृद्‌धि और खुशहाली का।
बुराई के राक्षस को मन से भगाएँ
हृदय में शांति का दीपक जलाएँ।''

अथवा

(ii) **सादा जीवन, उच्च विचार** **6**

आज के जमाने में बाहरी तड़क-भड़क, दिखावा और फैशन का बोलबाला है। जिधर भी नज़र डालें, उधर आडंबर दिखाई देते हैं। ऐसे समय में सादे जीवन और उच्च विचारों के प्रति आकर्षण कम हो जाना स्वाभाविक है। फिर भी यही एक आदर्श है जो हमें प्रमुखता से नीचे नहीं गिरने देगा। इस संदर्भ में निम्नलिखित पंक्तियाँ यथोचित है -

''सादा जीवन उच्च विचार, सफेद रंग बतलाता है।
सत्य, अहिंसा, भाईचारा का पाठ हमें सिखलता है।।''

सादा जीवन और उच्च विचार का आदर्श विद्‌यार्थियों के लिए अनिवार्य है। सादगी से रहनेवाले विद्‌यार्थी अनेक बुराईयों से बच सकते हैं। संयम के कारण मन पर नियंत्रण बना रहता है। मन पर नियंत्रण रहने से विद्‌यार्थी के अंदर

अनेक सद्‌गुणों का सहज विकास होता है। उसका आत्मविश्वास बढ़ता है। वह एक सुयोग्य नागरिक बनता है और आगे चलकर बड़े-बड़े काम कर सकता है। फिर वह स्वयं दूसरों के लिए आदर्श और उदाहरण स्वरूप बन जाता है।

संसार के सभी महापुरुषों ने सादा जीवन और उच्च विचार का उदाहरण प्रस्तुत किया है। महात्मा गांधी और स्वामी विवेकानंद ने अपनी सादगी और उच्च विचारों से देश और दुनिया की अनुपम सेवा की है। विश्व के किसी भी महान व्यक्ति ने शान और आडंबर की जिंदगी जीने पर जोर नहीं दिया, बल्कि वे इसकी बुराइयों की ओर ही सबका ध्यान आकृष्ट करते रहे हैं।

जिस व्यक्ति के मन में सादगी से जीवन जीने का विचार जाग जाता है, उसमें त्याग और परोपकार की वृत्ति स्वत: उत्पन्न हो जाती है। यदि उसके विचार ऊँचे हो, तो उसमें सहज ही तेजस्विता आ जाती है। इस प्रकार व्यक्ति अपने जीवनकाल में अनेक महान कार्य करता है और दूसरों को भी महान कार्य करने की प्रेरणा देता है। सादगीपूर्ण जीवन और उच्च विचारों का यही जादू है।

सादा जीवन अल्प व्यय-साध्य है। उसे चलाने के लिए किसी विशेष कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ता। सादगी में सौंदर्य होता है और वह शरीर ही नहीं मन को भी सुंदर बना देता है। सुन्दर शरीर और शान्त मन ही उच्च विचार कर सकता है। इसलिए इन दोनों का आपस में घना संबंध है। यदि आप सफल एवं तनावमुक्त होना चाहते हैं तथा जीवन का फल प्राप्त करना चाहते हैं, तो 'सादा जीवन, उच्च विचार' के सिद्धांत को अपनाइए।

❖❖❖